License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes (Biblica)

मरकुस 1:1–20

मरकुस ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बारे में बात करके अपना सुसमाचार को शुरू किया। यूहन्ना वह संदेशवाहक था जिसने घोषणा की थी कि यीशु आ रहे हैं। यूहन्ना ने लोगों को यह समझने में मदद की, कि वे ऐसे तरीकों से जी रहे हैं जो परमेश्वर को खुश नहीं करते हैं। जो लोग उसके संदेश पर विश्वास करते थे, उन्होंने बपतिस्मा लिया। इससे यह प्रकट हुआ कि वे पाप करना छोड़ना चाहते थे और परमेश्वर के मार्गों पर चलना चाहते थे। इसने उन्हें परमेश्वर के राज्य में नए जीवन के बारे में यीशु के संदेश को प्राप्त करने के लिए तैयार किया। पिता और पवित्र आत्मा ने यीशु के लिए अपना प्रेम दर्शाया जब उन्होंने बपतिस्मा लिया। परमेश्वर ने स्वर्ग से बात की और घोषणा की, कि यीशु उनके पुत्र हैं जिससे वह प्रेम करते हैं। पवित्र आत्मा कबूतर के रूप में यीशु पर उतरे। तब यीशु जंगल में चले गये। उनकी परीक्षा के बाद स्वर्गदूतों ने उनकी देखभाल की। उसके बाद यीशु अपना कार्य शुरू करने के लिए तैयार थे। उन्होंने सभी से अपने पापपूर्ण मार्गों से दूर होने और मन फिराने का आग्रह किया। फिर उन्होंने कुछ लोगों को अपने सबसे करीबी अनुयायी बनने के लिए आमंत्रित किया। शिष्य यीशु के साथ मिलकर कार्य करेंगे जब वह परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर लाएँगे।

मरकुस 1:21–45

यीशु ने अधिकार के साथ सिखाया। उन्होंने अपनी शक्ति का उपयोग लोगों को दुष्ट आत्माओं से मुक्त करने के लिए किया। दुष्ट आत्माएं बुरी आत्माएं होती हैं। यीशु ने उन लोगों को ठीक किया जो पीड़ित और बीमार थे। उन्होंने उन बाहरी लोगों को चंगा किया जो अपने समुदाय से अलग थे। मूसा की व्यवस्था ने दुनिया में हर चीज को शुद्ध या अशुद्ध के रूप में वर्णित किया। कुछ बीमारियाँ लोगों को अशुद्ध बना देती थीं। यहां तक कि किसी अशुद्ध चीज को छूने से अन्य चीजें और लोग भी अशुद्ध हो सकते थे। परन्तु यीशु किसी ऐसे व्यक्ति को छूने से अशुद्ध नहीं हुए जिसे अशुद्ध माना जाता था। इसके बजाय, जिन अशुद्ध लोगों को उन्होंने छुआ, वे शुद्ध हो गए। वे चंगे हो गए और फिर से अपने समुदाय का हिस्सा बन गए। जब यीशु ने लोगों में से दुष्ट आत्माओं को निकाला, तो उन्होंने दुष्ट आत्माओं को बोलने नहीं दिया। वह नहीं चाहते थे कि दुष्ट आत्माएं या लोग जोर से कहें कि वह कौन हैं। सभी को यह जानने का समय अभी नहीं आया था कि मसीहा आ चुका है।

मरकुस 2:1–22

लोग यीशु की शिक्षा और जिस तरह से उन्होंने लोगों को चंगा किया, उससे चकित थे। लेकिन धार्मिक अगुवों को तब गुस्सा आया जब यीशु ने एक व्यक्ति के पापों को क्षमा किया। वे मानते थे कि केवल परमेश्वर ही पाप क्षमा कर सकते हैं। यीशु एक मनुष्य थे। अगुवे यह समझ नहीं सके कि परमेश्वर यीशु के माध्यम से एक मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर आए थे। किसी ने इसकी उम्मीद नहीं की थी। यीशु लोगों को दर्शा रहे थे कि परमेश्वर कैसे हैं। यीशु बीमार लोगों के साथ रहने से नहीं डरते थे। वह उन लोगों से भी नहीं डरते थे जो दुष्टात्माओं से ग्रसित थे। उन्होंने पाप करने वाले लोगों से बात की और उनके साथ भोजन साझा किया। उन्होंने उन लोगों को आशा दी जिन्हें अन्य लोग स्वीकार नहीं करते थे। यीशु ने जो सिखाया और किया, वह धार्मिक अगुवों द्वारा सिखाई और की गई चीजों जैसा नहीं था। यह इतना अलग था कि यीशु ने इसे नए वस्त्र या नई दाखरस की तरह वर्णित किया। परमेश्वर यीशु के माध्यम से सब कुछ पूरी तरह से नया कर रहे थे। वह ऐसा जीवन ला रहे थे जिसे पाप और मृत्यु नष्ट नहीं कर सकते थे।

मरकुस 2:23–3:6

यीशु और फरीसियों के बीच सब्त के दिन के बारे में बहुत असहमति थी। परमेश्वर ने अपने लोगों को व्यवस्था दी थी कि वे सब्त के दिन को पवित्र दिन के रूप में आदर करें । यीशु ने फरीसियों को दर्शाया कि वे भूल गए थे कि सब्त का दिन वास्तव में किस लिए था। परमेश्वर के लोगों के लिए, यह विश्राम का दिन होना चाहिए था। भूख लगने पर खाना खाना और अच्छा करना परमेश्वर या सब्त के दिन का अपमान नहीं था। न ही लोगों को चंगा करना और जीवन बचाना। परन्तु यहूदी अगुवों ने सब्त के दिन को पवित्र रखने के बारे में कई अतिरिक्त नियम बना दिए थे। यीशु उन यहूदी नियमों का उल्लंघन कर रहे थे। वह धार्मिक अगुवों से नाराज थे कि वे अपने नियमों की इतनी परवाह करते थे। वे लोगों से या परमेश्वर की इच्छा से अधिक नियमों की परवाह करते थे। अगुवों को वे नये विचार पसंद नहीं आये जो यीशु सिखा रहे थे।

मरकुस 3:7–19

हर तरह के लोग यीशु से चकित थे और उनके पीछे चलते थे। वे उत्तर में गलील और दक्षिण में यहूदिया से आए थे। वे यर्दन नदी के पूर्व से और सोर और सिदोन के पश्चिम से आए थे। दुष्टात्माएँ जोर से चिल्ला रही थीं कि यीशु कौन हैं। यीशु ने उन्हें चुप रहने को कहा। इस्राएली सोचते थे कि वे जानते हैं कि मसीहा कैसा होगा। लेकिन यीशु चाहते थे कि लोग समझें कि

मसीहा वास्तव में क्या करने वाला है। इसलिए उन्होंने 12 शिष्यों को अपने सबसे करीबी अनुयायी बनने के लिए चुना। उन्होंने उन पर ध्यान केंद्रित किया और उन्हें सिखाया।

मरकुस 3:20–35

यीशु ने समझाने के लिए परिवारों और घरों के बारे में बात की कि उनकी सामर्थ कहाँ से आई। यीशु शैतान के परिवार या राज्य का हिस्सा नहीं थे। शैतान दुष्टात्मा का दूसरा नाम है। यीशु की शक्ति शैतान से नहीं आई थी। शैतान वह बलवान पुरुष था जिसका वर्णन यीशु ने किया था। यीशु ने बलवान पुरुष को बांधने और उसके घर से चोरी करने की बात की। यीशु इस बारे में बात कर रहे थे कि वह लोगों को पाप और बुराई से मुक्त करने के लिए आए थे। यीशु ने कहा कि परमेश्वर सभी पापों को माफ कर देते हैं सिवाय इसके जब लोग पवित्र आत्मा के खिलाफ बुरा बोलते हैं। यह दावा करना पाप है कि यीशु की सामर्थ परमेश्वर की पवित्र आत्मा से नहीं आती है। यह गलती से नहीं किया जा सकता। व्यक्ति को इसे करने का चुनाव करना पड़ता है। जब कोई इस विकल्प को चुनता है, तो वे यीशु में विश्वास नहीं करने का चुनाव करता है। वे परमेश्वर से प्रेम करने का चुनाव नहीं करते है। जो कोई भी यीशु में विश्वास करते है और परमेश्वर से प्यार करते है वह पवित्र आत्मा के खिलाफ बुरा नहीं बोल सकते। वे जानते हैं कि यीशु की सामर्थ्य परमेश्वर के पवित्र आत्मा से आती है। वे परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं और यीशु का अनुसरण करते हैं। जो कोई भी परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करते है वह उसके परिवार का हिस्सा है।

मरकुस 4:1–34

यीशु ने परमेश्वर के राज्य का वर्णन करने के लिए कहानियाँ सुनाईं। इस प्रकार की कहानियों को दृष्टांत कहा जाता है। जो लोग परमेश्वर से सुनने के लिए तैयार थे, वे उसकी आज्ञा मानने के लिए तैयार थे। उन्होंने यीशु के दृष्टांतों को सुना और फिर यीशु की आज्ञायें मानी। कई लोगों ने परमेश्वर की बात सुनने से इनकार कर दिया। उन्होंने यीशु की कहानियाँ सुनीं लेकिन उसकी आज्ञा नहीं मानी। यीशु ने अपने शिष्यों को कहानियों का अर्थ समझाया। परमेश्वर का राज्य एक बड़े और अचानक होने वाले घटना के रूप में पृथ्वी पर नहीं आता। यह धीरे-धीरे फैलता है। यह उन बीजों की तरह बढ़ता है जो बोए गए हैं। यीशु कहानी में किसान की तरह थे। उन्होंने जो बीज बोए थे, वे परमेश्वर का संदेश थे। परमेश्वर का राज्य तब तक बढ़ेगा जब तक यह पृथ्वी पर सभी तक नहीं पहुँच जाता। जैसे-जैसे बीज बढ़ता है, परमेश्वर अपनी प्रजा से फसल की प्रतीक्षा करते है। जिस प्रकार से यीशु ने उन्हें जीने के लिए सिखाया, उस पर चलने से लोग अच्छे फसल का हिस्सा बनते हैं।

मरकुस 4:35–5:20

जहाँ भी वह गए, यीशु ने उन लोगों के लिए शांति लाई जो उन पर विश्वास करते थे। यीशु ने बात की, और हवा और लहरों ने उनकी आज्ञा का पालन किया। तूफान को शांत करने से पता चला कि वह शिष्यों के चारों ओर के खतरों से अधिक शक्तिशाली थे। यीशु के शब्दों का दुष्टात्माओं पर भी अधिकार था। उन्होंने एक मनुष्य को उन दुष्टात्माओं से मुक्त किया जो उसे नियंत्रित करती थीं। यीशु ने यह सब एक ऐसे क्षेत्र में किया जो यहूदी नहीं था। यीशु न केवल यहूदियों के लिए बल्कि सभी लोगों के लिए परमेश्वर का राज्य ला रहे थे । यीशु सारी सृष्टि के सच्चे प्रभु हैं।

मरकुस 5:21–43

लोगों के चंगा होने के बारे में इन दो कहानियों में डर और विश्वास महत्वपूर्ण है। पहली कहानी में, स्त्री का मानना था कि यीशु के पास उसकी बीमारी को चंगा करने की सामर्थ्य था। फिर भी वह यह जानने से डरती थी कि वह कौन है। दूसरी कहानी में, याईर नाम का एक आराधनालय का सरदार भयभीत हो गया कि उसकी बेटी मर जाएगी। यीशु उस स्त्री और याईर दोनों के साथ नम्र थे। उन्होंने उनके भय को शांत किया और उनको उन पर विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित किया। यीशु ने याईर और उसकी पत्नी को चेतावनी दी कि वे अपनी बेटी के चंगा होने के बारे में किसी को न बताएँ। यीशु परमेश्वर के पुत्र हैं, जो वहां भी जीवन और चंगाई लाते हैं जहां मृत्यु पहले से ही आ चुकी है। लेकिन अभी तक किसी को भी इसके बारे में जानने का समय नहीं आया था।

मरकुस 6:1–13

यीशु गलील के एक साधारण कामकाजी परिवार से आए थे। हर कोई जानता था कि वह नासरत की मरियम के पुत्र थे। लेकिन यीशु के परिवार और समुदाय को यह समझ नहीं आया कि वह परमेश्वर के पुत्र भी थे। नासरत में बहुत कम लोग मानते थे कि यीशु उन्हें चंगा कर सकते हैं। यीशु के नगर और परिवार को उन पर विश्वास नहीं था। परन्तु इस्राएल में अन्य लोगों ने विश्वास किया। यीशु ने अपने 12 सबसे विश्वसनीय शिष्यों को अपने अधिकार के साथ भेजा। यीशु ने उन्हें जो अधिकार दिया, उसका मतलब था कि वे वही कार्य कर सकते थे जो यीशु कर रहे थे। कुछ लोग उनके द्वारा परमेश्वर के राज्य के संदेश को स्वीकार करेंगे और कुछ लोग नहीं करेंगे।

मरकुस 6:14–29

यीशु ने परमेश्वर के राज्य के बारे में सुसमाचार की घोषणा की। परन्तु इस्राएल में पहले से ही एक राजा था। राजा हेरोदेस अन्तिपास ने यीशु के कहने और करने के बारे में सुना। वह यह सुनकर खुश नहीं हुआ कि एक और राज्य आ चुका था।

वह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बारे में भी खुश नहीं था। यूहन्ना परमेश्वर के राज्य के आने के लिए लोगों को तैयार कर रहा था। उसने हेरोदेस को उन चीजों के बारे में बताया था जो वह गलत कर रहा था। दूसरों को बताना कि परमेश्वर ही सच्चा राजा है, खतरनाक हो सकता है।

मरकुस 6:30–44

मरकुस ने दर्शाया कि हेरोदेस ने अपने सुख और शक्ति के आधार पर किस प्रकार निर्णय लिए। फिर मरकुस ने दर्शाया कि यीशु हेरोदस से बहुत अलग थे। यीशु को उन लोगों के प्रति गहरी चिंता और प्रेम था जिनकी सेवा करने के लिए वह आए थे। यीशु ने देखा कि इस्राएल के लोग उन भेड़ों की तरह थे जिनका कोई रखवाला न था। वह उनका रखवाला बनने आए थे। उन्होंने अपने शिष्यों को इस्राएल भर में प्रचार करने और लोगों को चंगा करने के लिए भेजा। फिर यीशु ने लोगों को शिक्षा देने में समय बिताया। शिष्य चिंतित थे क्योंकि भीड़ भूखी थी। शिष्य अभी भी नहीं समझ पाए थे कि यीशु के पास वह सब कुछ प्रदान करने की सामर्थ्य था, जिसकी उन्हें आवश्यकता थी। यीशु ने थोड़े से भोजन को लिया। इसके साथ उन्होंने सुनिश्चित किया कि पूरी भीड़ को पर्याप्त भोजन मिले। यह चमत्कार एक चिन्ह था। यह इस बात का चिन्ह था कि कैसे यीशु एक रखवाले की तरह लोगों की देखभाल करते थे।

मरकुस 6:45–56

यीशु उस क्षेत्र में नहीं रुके जहाँ उन्होंने 5,000 से अधिक लोगों को भोजन खिलाया था। वह पूरे इस्राएल में लोगों की सेवा करना चाहते थे। उन्होंने अपने शिष्यों को आगे भेज दिया। जाने से पहले, यीशु ने परमेश्वर, अपने पिता के साथ अकेले में प्रार्थना में समय बिताया। प्रार्थना यीशु के लिए बहुत महत्वपूर्ण थी। फिर उन्होंने यात्रा जारी रखने के लिए गलील की झील को पार किया। उनके शिष्य डर गए जब उन्होंने यीशु को पानी पर चलते हुए देखा। वे अभी भी नहीं समझ पाए थे कि यीशु के पास पृथ्वी में हर चीज पर सम्पूर्ण सामर्थ्य है। यीशु ने हवा को शांत किया और अपने मित्रों को सांत्वना दी। फिर उन्होंने यात्रा, शिक्षा और लोगों को चंगा करना जारी रखा। मरकुस द्वारा दर्ज की गई ये घटनाएँ बताती हैं कि यीशु कितने शक्तिशाली और कितने दयालु हैं।

मरकुस 7:1–23

कई फरीसी और शास्त्री दूसरों की परवाह करने वाले और ईश्वरीय अगुवा नहीं थे। उन्होंने यहूदियों से कई यहूदी नियमों का पालन करने की मांग की। इन नियमों में से कई नियम लोगों के जीवन को कठिन बना देते थे और उन्हें परमेश्वर के करीब नहीं लाते थे। यीशु ने सिखाया कि परमेश्वर की आज्ञाएँ कितनी महत्वपूर्ण हैं। परमेश्वर की व्यवस्था लोगों को उनकी उपासना करने और उनके करीब होने में मदद करने के लिए हैं। फिर भी यीशु ने लोगों को अशुद्ध चीजों के बारे में आज्ञाओं को समझने का एक अलग तरीका सिखाया। यह आज्ञाएँ बुराई से बचने के बारे में हैं। बुरे शब्द और कार्य तब शुरू होते हैं जब लोगों के हृदयों में बुरी इच्छाएँ होती हैं। यीशु उन लोगों को जो उस पर विश्वास करते हैं, एक ऐसा हृदय देते हैं जो परमेश्वर से प्रेम करता है और उसकी आज्ञा मानता है।

मरकुस 7:24–37

यीशु लोगों के ध्यान से बचने के लिए अन्यजाती नगर चले गए। एक यूनानी (यूनान) महिला जो यहूदी नहीं थी, यीशु से मदद की भीख मांगने लगी। उसे दृढ़ विश्वास था कि यीशु के पास दुष्टात्माओं पर सामर्थ्य है। हालांकि यीशु यहूदियों के बीच सेवा करने आए थे, फिर भी उन्होंने उस महिला की बेटी को चंगा किया। फिर एक अन्यजाती नगर में, यीशु ने एक मनुष्य को चंगा किया जो सुन या बोल नहीं सकता था। यीशु के स्पर्श ने उसके कानों को पूरी तरह से सुनने और उसके मुंह को स्पष्ट रूप से बोलने के लिए खोल दिया। यीशु संसार में लोगों को परमेश्वर के बारे में सत्य को सुनाने के लिए आए थे। वह चाहते थे कि सभी लोग सत्य को समझें और इसके बारे में बात करें।

मरकुस 8:1–21

यीशु ने पूरे ग्रामीण क्षेत्र में चमत्कार किए थे। उन्होंने लोगों को चंगा किया, दुष्ट आत्माओं को निकाला और मृतकों को जीवित किया। फिर उन्होंने कुछ रोटियों से 4,000 लोगों को भोजन खिलाया। यह दूसरी बार था जब उन्होंने चमत्कारिक तरीके से लोगों को खिलाया था। फरीसियों ने फिर भी एक और चिन्ह मांगा ताकि यह साबित हो सके कि परमेश्वर ने यीशु को भेजा था। उन्हें वास्तव में और चिन्हों की आवश्यकता नहीं थी। वे यीशु का अपमान करना चाहते थे। यीशु ने 12 चेलों को धार्मिक अगुवों और हेरोदेस के अनुयायियों के बारे में चेतावनी दी। लेकिन चेले अभी भी यह नहीं समझ पाए कि यीशु क्या कह रहे थे।

मरकुस 8:22–30

पहली बार जब यीशु ने अंधे व्यक्ति को छुआ, तो उसने तुरंत स्पष्ट रूप से नहीं देखा। फिर यीशु ने उसकी आँखों को फिर से छुआ और उसने स्पष्ट रूप से देखा। इस घटना के तुरंत बाद शिष्यों की एक घटना आई। इस बात ने शिष्यों के बारे में कुछ दर्शाया। उन्होंने तुरंत स्पष्ट रूप से नहीं समझा कि यीशु कौन थे। उन्होंने उनके बारे में थोड़ा-थोड़ा करके सीखा। जितना अधिक वे यीशु के साथ रहते थे, उतना ही अधिक वे उनके बारे में समझते थे। यीशु ने अपने शिष्यों से पूछा कि वे क्या सोचते हैं कि वह कौन हैं। पतरस ने उत्तर दिया कि यीशु वह मसीहा थे जिसे परमेश्वर ने भेजने का वादा किया था। यीशु ने अंधे व्यक्ति से कहा था कि वह लोगों को न बताए कि वह चंगा हो गया है। उन्होंने अपने शिष्यों से भी कहा कि वे इस बारे में बात न करें कि वह कौन हैं। अगर हर कोई जान जाता

कि यीशु मसीहा हैं, तो समस्याएं होतीं। राजा हेरोदेस और रोमी अगुवों को वह खबर पसंद नहीं आती।

मरकुस 8:31–9:1

यीशु जानते थे कि वह क्रूस पर मरेंगे। उन्हें रोमी सरकार द्वारा क्रूस पर चढ़ाया जाएगा। यीशु ने अपने बारे में मनुष्य के पुत्र के रूप में बात की। उन्होंने मसीहा के बारे में शिष्यों के विश्वास को चुनौती दी। पतरस को यीशु की बातें पसंद नहीं आईं। यीशु के शिष्यों को खुद को ना कहना चाहिए। उन्हें यीशु को हाँ कहना चाहिए। उन्हें अपने जीवन में क्रूस के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। इसका मतलब है कि उन्हें यीशु का अनुसरण करने के लिए सब कुछ त्यागने के लिए तैयार रहना चाहिए। इसमें उनके जीवन का त्याग भी शामिल है। यह सुनने और समझने के लिए एक कठिन शिक्षा थी।

मरकुस 9:2–13

यीशु पतरस, याकूब और यूहन्ना को एक पहाड़ पर ले गए। यीशु उनके सामने ही रूपांतरित हो गए। शिष्यों ने देखा कि यीशु के पास परमेश्वर के पुत्र के रूप में महिमा थी। मूसा और एलिय्याह वहाँ यीशु से बातें कर रहे थे। वे इस्राएल के इतिहास के दो सबसे महत्वपूर्ण लोग थे। पतरस इतना चकित और भयभीत था कि उसके शब्द और विचार भ्रमित हो गए। तब परमेश्वर ने बात की और शिष्यों से यीशु की बात सुनने और उनकी आज्ञा मानने का आग्रह किया। यीशु ने तीनों शिष्यों से कहा कि उन्होंने पहाड़ पर जो कुछ भी देखा था, उसे किसी को न बताएं। केवल उनके मृतकों में से जी उठने के बाद ही वे दूसरों से इसके बारे में बता सकते थे। शिष्य यह नहीं समझ पाए कि यीशु का मृतकों में से जी उठने का क्या अर्थ था।

मरकुस 9:14–29

यीशु के चेलों को एक दुष्ट आत्मा का सामना करना पड़ा जिसे वे निकाल नहीं सके। इससे वे भ्रमित हो गए। इससे पहले, यीशु ने उन्हें उस प्रकार का कार्य करने का अधिकार दिया था जो वह स्वयं कर रहे थे। उन्होंने लोगों को चंगा करने और दुष्ट आत्माओं को निकालने के लिए यात्रा की थी। फिर भी, यीशु के मृत्यु के करीब आने पर उनका अनुसरण करना कठिन हो रहा था। शिष्यों ने एक लड़के को चंगा करने की कोशिश की लेकिन वे उसमें नई जान नहीं ला सके। लड़के के पिता को भी विश्वास करने में कठिनाई हो रही थी कि यीशु उनके बेटे को चंगा कर सकते हैं। यीशु के शब्दों से पता चला कि वह उन लोगों से कितना उदास हो गए थे जो परमेश्वर की शक्ति पर भरोसा नहीं करते थे। शक्ति और दया के साथ, यीशु ने लड़के को हाथ से पकड़ा और उसे उठाया।

मरकुस 9:30–37

यीशु ने अपने चेलों के साथ अधिक से अधिक समय अकेले बिताया। उन्होंने इस समय का उपयोग उन्हें सिखाने के लिए किया। यीशु ने उन्हें अपने होने वाले कष्टों के बारे में सिखाया। शिष्य इस बात को लेकर चिंतित थे कि यीशु के राज्य में सबसे महत्वपूर्ण कौन होगा। इसलिए यीशु ने उन्हें महानता को समझने का एक अलग मार्ग सिखाया। सच्ची महानता का अर्थ उन लोगों का स्वागत करना है, जिन्हें महत्वहीन माना जाता है। इसका अर्थ है दूसरों की सेवा करना। इसका मतलब है अपनी जान देने के लिए तैयार रहना।

मरकुस 9:38–50

यीशु ने लोगों को चंगा किया और मुक्त किया। लेकिन दुष्टात्माएँ लोगों को चोट पहुँचाती रहीं। यीशु ने अपने चेलों को दुष्टात्माओं को निकालने की सामर्थ्य दी। अन्य लोग भी थे जिन्होंने यीशु के नाम से दुष्टात्माओं को निकाला। शिष्य उन्हें रोकना चाहते थे। यीशु ने शिष्यों को सिखाया कि जो कोई भी उसकी सेवा करता है उसे स्वीकार करें। उन्हें किसी भी व्यक्ति के साथ मित्रता से काम करना चाहिए जो ईमानदारी से परमेश्वर का कार्य करता है। यीशु के अनुयायियों को किसी भी चीज़ को ना कहना चाहिए जो परमेश्वर के जीवन जीने के तरीकों का विरोध करती है। परमेश्वर के तरीकों का पालन करने से इनकार करने में बड़ी दर्द और पीड़ा होती है। यीशु ने नरक को बड़े दर्द और पीड़ा के रूप में वर्णित किया जो हमेशा के लिए रहती है। जो लोग पाप को ना कहने से इनकार करते हैं वे परमेश्वर के साथ जीवन को ना कह रहे हैं। परन्तु यीशु चाहते थे कि हर कोई परमेश्वर के राज्य में उसके साथ रहे।

मरकुस 10:1–16

फरीसियों ने यीशु को शब्दों से फँसाने की कोशिश की। वे चाहते थे कि यीशु मूसा की व्यवस्था के खिलाफ कुछ कहें। यीशु ने इस अवसर का उपयोग उन्हें यह सिखाने के लिए किया कि परमेश्वर चाहता है कि विवाह कैसा हो। फिर लोग छोटे बच्चों को यीशु के पास लाए और उन्होंने उन्हें आशीष दिया। बच्चों ने यीशु पर भरोसा किया और उन्हें स्वीकार किया। वे फरीसियों के विपरीत थे जिन्होंने यीशु को स्वीकार नहीं किया। यीशु चाहते थे कि लोग उन पर वैसे ही भरोसा करें जैसे छोटे बच्चों ने किया। लोग परमेश्वर का राज्य प्राप्त नहीं कर सकते जब तक उनके पास उस तरह का भरोसा न हो।

मरकुस 10:17–31

यीशु ने सिखाया कि परमेश्वर के राज्य के प्रति समर्पित होना किसी भी अन्य चीज़ से अधिक महत्वपूर्ण है। एक धनी व्यक्ति जानना चाहता था कि उसे अनन्त जीवन पाने के लिए क्या करना होगा। यीशु ने उससे कहा कि उसे अपनी संपत्ति त्यागनी होगी। उसे धन का उपयोग गरीबों की मदद के लिए करना होगा। फिर वह यीशु का अनुसरण कर सकता था। वह व्यक्ति ऐसा करने के लिए तैयार नहीं था। यीशु का अनुसरण करने की एक वास्तविक कीमत है। इसके लिए लोगों को पूरी

तरह से परमेश्वर पर भरोसा करना और उसकी आज्ञा का पालन करना आवश्यक है। कुछ लोग परमेश्वर के राज्य के लिए अपना सब कुछ देने के लिए तैयार थे। बाद में परमेश्वर उन्हें उससे अधिक इनाम देगा जितना उन्होंने त्यागा था। वे आने वाले संसार में हमेशा उसके साथ रहेंगे। ऐसा तब होगा जब परमेश्वर नई सृष्टि में सभी बातों को नया बनाएगा।

मरकुस 10:32–45

यीशु यरूशलेम की ओर यात्रा कर रहे थे। यह खतरनाक था। यीशु ने अपने शिष्यों को फिर से बताया कि नगर पहुंचने के बाद उनके साथ क्या होगा। याकूब और यूहन्ना ने जो सवाल पूछा, उससे पता चला कि वे यीशु के राज्य को नहीं समझते थे। वे चाहते थे कि जब वह राजा बने तो उन्हें बहुत महत्वपूर्ण माना जाए। लेकिन यीशु क्रूस पर कष्ट सहकर और मरकर राजा बनेंगे। यीशु हिंसक नहीं थे। उन्होंने लोगों को वह करने के लिए मजबूर नहीं किया जो वह चाहता था। इसके बजाय, वह सेवा करने और अपना जीवन देने आए थे। उनकी मृत्यु वह कीमत थी जो लोगों को मुक्त करने के लिए चुकानी थी। जो लोग उनके राज्य का हिस्सा बनना चाहते हैं, उन्हें उनके उदाहरण का पालन करना चाहिए। उन्हें दूसरों के लिए कष्ट सहने और दूसरों की सेवा करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

मरकुस 10:46–52

बरतिमाई अंधा और बहुत जरूरतमंद था। यीशु को जरूरतमंद लोगों के लिए बहुत चिंता थी। बरतिमाई ने सुना कि यीशु निकट थे। उसने पहचाना कि यीशु राजा दाऊद के परिवार से थे। बरतिमाई ने स्वीकार किया कि उसे दया की जरूरत थी। उसे विश्वास था कि यीशु उसकी मदद कर सकते हैं। उसने हार नहीं मानी और न ही दूसरों को उसे रोकने दिया। बरतिमाई अपने पैरों पर खड़ा हो गया और यीशु को बताया कि उसे क्या चाहिए। जब यीशु ने उसे चंगा किया, तो बरतिमाई ने तुरंत यीशु का अनुसरण किया। बरतिमाई उन सभी के लिए एक उदाहरण है जो यीशु के पास आना चाहते हैं।

मरकुस 11:1–11

यीशु ने कई बार लोगों से कहा था कि वे उनके बारे में न बताएं कि वह वास्तव में कौन हैं। परन्तु फिर उन्होंने सार्वजनिक रूप से कुछ साहसिक किया। उन्होंने यरूशलेम में इस्राएल के मसीहा के रूप में प्रवेश किया। लोगों ने होशाना चिल्लाया! इसका मतलब है हमें अब बचाओ! वे प्रसिद्ध राजा दाऊद के राज्य जैसा राज्य चाहते थे। वे रोमियों से जो उनके शत्रु थे मुक्ति चाहते थे। लेकिन यीशु विनम्र थे और युद्ध के घोड़े के बजाय गधे पर सवार हुए।

मन्दिर इस्राएल के साथ जो कुछ गलत था उसका एक चिन्ह बन गया था। यीशु ने यरूशलेम में अपने दूसरे दिन ही वहाँ चल रही हानिकारक प्रथाओं को बंद कर दिया। तीसरे दिन, पतरस यीशु के शब्दों की सामर्थ्य से चकित था। पहले, यीशु ने एक अंजीर के पेड़ से बात की थी। पतरस ने देखा कि पेड़ सूख गया था। इसमें कोई फल नहीं था। यह एक चिन्ह था कि इस्राएल को परमेश्वर का अनुसरण न करने के कारण न्याय का सामना करना पड़ेगा। फिर यीशु ने अपने शिष्यों को प्रार्थना के बारे में और सिखाया। उनके अनुयायी साहसपूर्वक प्रार्थना कर सकते हैं और विश्वास कर सकते हैं कि परमेश्वर उनकी सुनता है। परमेश्वर अपने बच्चों को उनकी आवश्यकता की चीजें देने की इच्छा रखता है। यीशु ने शिष्यों को यह भी याद दिलाया कि जब वे प्रार्थना करें तो हमेशा विनम्र रहें। परमेश्वर से प्रार्थना करने से उन्हें परमेश्वर की क्षमा प्राप्त करने और दूसरों को क्षमा करने की याद आएगी।

मरकुस 11:27–12:12

धार्मिक अगुवों के साथ संघर्ष और भी ज्यादा बढ़ गया। उन्होंने फिर से यीशु के अधिकार को चुनौती दी। यीशु ने उनके बारे में एक कहानी सुनाई। इसमें, एक अंगूर के बाग के किसानों ने मालिक को कोई भी फल देने से इनकार कर दिया। जब दास फल लेने आए तो उन्होंने दासों के साथ बुरा व्यवहार किया। फिर मालिक ने अपने बेटे को भेजा और किसानों ने उसे मार डाला। यीशु ने भजन संहिता 118 के वचनों के साथ समाप्त किया। यह भजन एक पत्थर के बारे में बात करता है जिसे स्वीकार नहीं किया गया था। यीशु वही पत्थर थे। परमेश्वर यीशु का उपयोग पूरी तरह से कुछ नया बनाने के लिए करेंगे।

मरकुस 12:13–27

आम तौर पर फरीसी, हेरोदियों और सदूकी एक-दूसरे के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार नहीं करते थे। परन्तु उन सभी ने मिलकर यीशु को रोकने की कोशिश की। उन्होंने उससे कर, विवाह और मृतकों के पुनरुत्थान के बारे में कठिन प्रश्न पूछे। वे यीशु को या तो यहूदी लोगों के साथ या रोमियों के साथ मुसीबत में डालना चाहते थे। परन्तु यीशु ने चतुराई से उत्तर दिए जिससे उन्हें और भी कठिन प्रश्नों के बारे में सोचना पड़ा। उन पर कैसर का क्या कर्ज़ था? क्या वे परमेश्वर का कर चुकाते थे? परमेश्वर की शक्ति क्या कर सकती थी? परमेश्वर मृत लोगों के परमेश्वर कैसे हो सकते हैं?

मरकुस 12:28–44

एक व्यवस्था के शिक्षक ने समझा कि परमेश्वर से प्रेम करना और दूसरों की सेवा करना महत्वपूर्ण था। ये चीजें उन सभी अन्य नियमों और प्रथाओं से अधिक महत्वपूर्ण थीं जो यहूदी

पालन करते थे। यीशु उस व्यक्ति की बुद्धिमानी देखकर प्रसन्न हुए। फिर यीशु ने अपने प्रश्न पूछे जब वह सिखा रहे थे। उन्होंने समझाया कि इस्राएल के शिक्षकों में क्या गलत था। वे अपनी महिमा और सम्मान की परवाह करते थे। वे परमेश्वर के लोगों की चिंता नहीं करते थे। उनके कुछ नियमों ने भेंट देने वाली विधवा जैसे लोगों के लिए जीवन कठिन बना दिया। यीशु ने बताया कि अमीर लोग अपने पास जो कुछ था उसका केवल एक हिस्सा ही परमेश्वर को दे रहे थे। वह विधवा उन लोगों का उदाहरण थी जो परमेश्वर के लिए अपना सब कुछ बलिदान कर देते हैं। यीशु ने उसके भेंट का आदर किया।

मरकुस 13:1–13

यीशु के एक शिष्य ने उनसे यरूशलेम के मन्दिर को देखने के लिए कहा। यह बहुत बड़ा और सुंदर था। परन्तु यीशु ने कहा कि इसे नष्ट कर दिया जाएगा। फिर जैतून के पहाड़ पर यीशु ने शिष्यों के उस प्रश्न का उत्तर दिया कि यह कब होगा। यह एक कठिनाई और अव्यवस्था की अवधि के बाद होगा। यीशु के अनुयायियों के लिए कठिनाई होगी और वे खतरे में होंगे। ये वही प्रसव-पीड़ा थी जिसका यीशु ने उल्लेख किया था। उनके अनुयायियों को धैर्य रखना होगा और पवित्र आत्मा पर विश्वास करना होगा जो उनकी मदद करेगा।

मरकुस 13:14–37

यीशु ने उन चिन्हों का वर्णन किया जो यरूशलेम में मंदिर के नष्ट होने से पहले होंगे। बहुत भ्रम और उलझन की स्थिति होगी। यीशु ने अपने अनुयायियों को यरूशलेम से भागने की चेतावनी दी। फिर यीशु ने यशायाह की पुस्तक से वचनों का उपयोग किया। यह वचन उन भयानक चीजों के बारे में बात करते थे जो बाबुल और एदोम के नष्ट होने पर हुई थीं। उन्होंने दर्शाया कि उस समय के लोग कैसे डरे हुए थे और सुरक्षित महसूस नहीं करते थे। यीशु ने चेतावनी दी कि वैसा ही डरावना और भ्रमित करने वाला समय फिर से आने वाला है। यह शिष्यों के जीवित रहते हुए होगा। यीशु चाहते थे कि वे समझें कि उन्हें तैयार रहना चाहिए। शिष्यों को विश्वास करना चाहिए कि परमेश्वर उनकी देखभाल करेंगे। यीशु द्वारा वर्णित कई चीजें ईस्वी 70 में हुईं। तब रोमी सेना ने मंदिर को नष्ट कर दिया था।

मरकुस 14:1–11

इस्राएल के अगुवे यीशु के खिलाफ योजनाएं बना रहे थे। सब कुछ ठीक वैसा ही हो रहा था जैसा यीशु ने कहा था जब वह यरूशलेम पहुंचे। यह लगभग फसह के पर्व का समय था। इस पर्व को तब मनाया गया जब परमेश्वर ने अपने लोगों को मिस्र की गुलामी से स्वतंत्र किया। जब वह मर गया तो यीशु लोगों को पाप की गुलामी से मुक्त कर देगा। बैतनिय्याह की स्त्री ने यीशु को एक अद्‌भुत उपहार देकर सम्मानित किया। यीशु ने कहा कि महंगा इत्र उनके देह को गाड़े जाने की तैयारी के लिए था। तब मरकुस ने दर्शाया कि यीशु की मृत्यु का कारण क्या होगा। यीशु का एक विश्वसनीय शिष्य उन्हें उन लोगों के हवाले कर देंगा जो उन्हें मारना चाहते थे। मरकुस ने पूरी तरह से यह नहीं बताया कि यहूदा इस्करियोती ऐसा क्यों करना चाहता था।

मरकुस 14:12–31

यीशु ने अपने शिष्यों के साथ एक अंतिम भोजन किया। उन्होंने कहा कि शिष्यों में से एक उन्हें मारने के लिए सौंप देगा। इससे अन्य शिष्य भ्रमित हो गए। फिर यीशु ने अपने देह और अपने लहू के बारे में बात की। उन्होंने अपने देह को उस रोटी के समान बताया जो तोड़ी जाती है। उनका लहू उस दाखरस की तरह था जो बहाया जाता है। वह परमेश्वर और उनके लोगों के बीच एक नयी वाचा स्थापित कर रहे थे। यीशु का देह उस भोजन की तरह था जिसने एक वाचा को आधिकारिक बना दिया। नयी वाचा उन सभी लोगों के साथ थी जो परमेश्वर के राज्य का हिस्सा बनना चाहते थे। यह सब शिष्यों के लिए समझना कठिन था। वे नहीं जानते थे कि यीशु ने क्यों कहा कि वे सभी उसे छोड़ देंगे। उन सभी ने विश्वासयोग्य रहने का वादा किया। यीशु जानते थे कि वे नहीं रह पाएँगे। फिर भी उन्होंने यह भी वादा किया कि वे बाद में फिर से एक साथ होंगे।

मार्क 14:32–52

यीशु बहुत परेशान थे। उन्होंने अपने मित्रों से उनकी सहायता करने के लिए कहा। उन्होंने पतरस, याकूब और यूहन्ना से प्रार्थना में शामिल होने को कहा लेकिन वे सो गए। इसलिए उन्होंने अपनी परेशानियों के बीच खुद ही प्रार्थना की। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि वह घड़ी आ गई है। वह उन सभी कष्टों के बारे में बात कर रहे थे जिनसे उन्हें गुजरना था। यीशु एक मानव थे और कष्टों को स्वीकार करने के लिए उनका संघर्ष वास्तविक था। फिर भी उनका जीवन त्यागना ही वह कारण था जिसके लिए वह पृथ्वी पर आए थे। इसी तरह वह उद्धार ला सकते थे। इसलिए उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा किया और वही किया जो परमेश्वर चाहते थे। यीशु की प्रार्थना समाप्त करने के बाद, यहूदा इस्करियोती ने उन्हें उन लोगों के हवाले कर दिया जो उनसे नफरत करते थे। यीशु ने इस्राएल के लोगों के बीच कार्य करते समय उनके विरुद्ध कभी हिंसा का प्रयोग नहीं किया था। और वह रोम के विरुद्ध लड़ने वाले विद्रोही नहीं थे। फिर भी उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। शिष्य बहुत डर गए थे। वे सभी खुद को बचाने के लिए भाग गए। यह ठीक वैसा ही हुआ जैसा यीशु ने कहा था।

मरकुस 14:53–65

मूसा की व्यवस्था में किसी को भी मृत्यु की सजा देने के लिए नियम थे। यह पहला मुकदमा महासभा के उन नियमों का पालन करने की कोशिश के बारे में था। यहूदी न्यायलय को

यीशु के खिलाफ लाए गए आरोपों का सबूत खोजने में कठिनाई हो रही थी। फिर यीशु ने दानिय्येल से मनुष्य के पुत्र के बारे में कुछ शब्दों का उपयोग किया (दानिय्येल अध्याय 7)। वर्षों से यीशु ने लोगों के बीच सेवा करते हुए खुद को मनुष्य का पुत्र कहा था। जल्द ही परमेश्वर दिखाएँगे कि वह सच कह रहे थे। परमेश्वर उन्हें सभी राष्ट्रों पर अधिकार, महिमा और सामर्थ देंगे। न्यायलय ने यीशु पर झूठा नबी होने का आरोप लगाया जिसने परमेश्वर के खिलाफ बुरा बोला है। उन्होंने यीशु का मजाक उड़ाया और उनके सिपाहियों ने उन्हें पीटा। परन्तु रोमी सरकार के नियमों ने महासभा को किसी को मौत की सजा देने की अनुमति नहीं दी थी। यहूदी मुकदमे के बाद, महासभा ने यीशु को रोमी नियमों के अनुसार मुकदमा चलाने के लिए भेज दिया।

मरकुस 14:66–72

जब यहूदी न्यायलय ने यीशु से सवाल किया, तो उन्होंने सच बोला। जब आँगन में पतरस से सवाल किया गया, तो उसने झूठ बोला। पतरस ने कभी स्वीकार नहीं किया था कि यीशु यरूशलेम में मरेंगे। वह यीशु से प्रेम करता था परन्तु वह अभी भी नहीं समझ पाया था कि यीशु पृथ्वी पर क्या करने आए थे। पतरस ने घमंड से वादा किया था कि वह कभी यीशु को नहीं छोड़ेगा। परन्तु वह असफल हो गया। पतरस ने तीन बार कहा कि वह यीशु को नहीं जानता। जब उसे एहसास हुआ कि उसने क्या किया है, तो वह बहुत दुखी हुआ।

मरकुस 15:1–15

यीशु का दूसरा मुकदमा यहूदिया के रोमी राज्यपाल पीलातुस के साथ था। पीलातुस को यहूदी धार्मिक मामलों की परवाह नहीं थी जैसे कि महासभा को थी। लेकिन उसे इस बात की परवाह थी कि यीशु ने खुद को यहूदियों का राजा बताया था। यह इस्राएल में रोमी शासन के लिए समस्याएं पैदा कर सकता था। पीलातुस इस बात से हैरान था कि यीशु अपने खिलाफ आरोपों को रोकने की कोशिश नहीं कर रहे थे। हर साल फसह के पर्व पर पीलातुस एक कैदी को रिहा कर देता था। भीड़ ने बरअब्बा को रिहा करने के लिए चुना। वे चाहते थे कि यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाए। यीशु ने रोमी सरकार के खिलाफ कुछ भी गलत नहीं किया था। लेकिन भीड़ चाहती थी कि उन्हें अपराधी के रूप में मृत्यु की सजा दी जाए।

मरकुस 15:16–39

सैनिकों ने यीशु के लिए कांटों का ताज बनाया। उन्होंने यहूदियों के राजा के रूप में उनका मजाक उड़ाया। उनके सिर के ऊपर का चिन्ह एक क्रूर मजाक था जो यह घोषणा कर रहा था कि वह राजा थे। जिन लोगों ने यीशु को मरते हुए देखा, उन्होंने राजा होने का दिखावा करने के लिए उसका मज़ाक उड़ाया। कोई नहीं समझा कि यीशु वास्तव में राजा थे। वह राजा थे जिन्होंने अपने लोगों के लिए अपना जीवन देकर उनकी सेवा की। और वह मरते समय भी परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर ला रहे थे। यीशु पीड़ित थे। उन्होंने भजन संहिता 22 के वचनों का उपयोग करके परमेश्वर को पुकारा। जब यीशु पीड़ित थे तो दिन में तीन घंटे तक अंधकार छाया रहा। यह एक चिन्ह था जो दिखाता था कि यीशु की मृत्यु कितनी महत्वपूर्ण थी। यहां तक कि एक रोमी अधिकारी ने भी यह पहचान लिया कि यीशु अन्य लोगों की तरह नहीं थे। जब यीशु मरे तो मन्दिर के अति पवित्र स्थान का पर्दा फट गया। उनकी मृत्यु का मतलब था कि लोग फिर से परमेश्वर के करीब हो सकते थे।

मरकुस 15:40–47

यीशु मर चुके थे। वह सारी आशा जो यीशु अपने अनुयायियों के लिए लेकर आए थे, वह भी ख़त्म होती दिख रही थी। शिष्य डर के मारे भाग गए थे। जो महिलाएं गलील में यीशु के साथ थीं, वे उनके पास रहीं। उन्होंने उन्हें मरते और फिर दफन होते देखा। यूसुफ नामक एक यहूदी अगुवे ने यीशु के शरीर का ध्यान रखा। यीशु ने वह काम पूरा कर लिया था जिसके लिए वह आए थे।

मरकुस 16:1–8

तीन स्त्रियाँ जो यीशु से प्रेम रखती थीं, सबसे पहले यह जान पाई कि वह अब मृत नहीं थे। उन्होंने यीशु के पुनरुत्थान के सुसमाचार पर विश्वास किया। उन स्त्रियों को यह सुसमाचार चेलों के साथ साझा करने के लिए कहा गया था। उस समय कई यहूदियों का मानना था कि परमेश्वर अपने लोगों को मृतकों में से जीवित करेगा। वे सोचते थे कि यह तब होगा जब दुनिया का अंत होगा। कोई भी यह उम्मीद नहीं कर रहा था कि यीशु के समय में पुनरुत्थान होगा। इसलिए यीशु के बारे में समाचार ने स्त्रियों को भ्रमित कर दिया। वे डर गईं और भाग गईं। मरकुस ने इस बिंदु पर पुनरुत्थान की अपनी कहानी को रोक दिया।

मरकुस 16:9–20

मरकुस के सुसमाचार की सैकड़ों साल पुरानी कई प्रतियां हैं। वे प्राचीन हैं। लोगों ने उन्हें हाथ से प्रतिलिपि किया। मरकुस के सुसमाचार की सबसे पुरानी और स्पष्ट प्रतियों में पद 9 से 20 शामिल नहीं हैं। यह हिस्सा अन्य विश्वासियों द्वारा जोड़ा गया था। यह नए नियम के अन्य भागों में यीशु के बारे में घटनाओं से मेल खाते है। यह दिखाता है कि यीशु इस्राएल के मसीहा हैं। यह दिखाता है कि वह परमेश्वर द्वारा बनाई गई हर चीज के प्रभु हैं। उनका पुनरुत्थान लोगों को पाप, मृत्यु और बुराई की शक्ति से स्वतंत्र करता है। यीशु यह स्वतंत्रता उन सभी को देते हैं जो उन पर विश्वास करते हैं। यीशु के अनुयायियों को यीशु के साथ परमेश्वर के नये जीवन के भेंट के बारे में सभी को बताना है। परमेश्वर चाहते हैं कि हर जगह के सभी लोग उनके परिवार और उनके राज्य में शामिल हों।